प्रश्नोत्तरी विलास

(ले०— रसिकाचार्य । अनन्त श्रीस्वामीयुगलानन्यशरणजी महाराज विरचित)

❀ दोहा ❀

पूरन परम प्रकाश पर, परानन्द गुन ग्राम ।
वन्दौं सीताराम श्री, चरन सरोज ललाम ॥ १ ॥
श्रीसतगुरु मुद मोद प्रद, पदपंकज उर ध्याय ।
बार-बार यांचो सरस, नाम रूप हरषाय ॥ २ ॥
परिकर निकर विभूति कर, वन्दौं सहित हुलास ।
दीजै दया निकेत मोहि, नाम नेह अभिलास ॥ ३ ॥
अमर गिरा अतिशय कठिन, पढि न सकत सब जीव ।
तिन हित भाषा साधु सुठि, कीन्हीं विमल अतीव ॥४॥
वस्तु बोध किल चाहिये, काज न भाषा संग ।
भाजन सुवरन मनि मृदन, मांझ चोल चट रंग ॥५॥
गुरु सुचि सिष सम्बाद सह, प्रश्नोत्तरी अनूप ।
पढ़व विचारत सम लहत, पावत मंगल रूप ॥ ६ ॥
अति अपार संसार निधि, मगन कृपानिधि चित्त ।
केहि शरनागत के गये, तरौं दयाल सुचित्त ॥ ७ ॥
श्रीसीतावर पद पदुम, पोत पवित्र विचित्र ।
तेहि अवलंबन सतत करि, परिये पार सरित्र ॥ ८ ॥
बद्ध कवन ? 'जो विषय रत', मुक्त ? सोई गत राग ।
निरय घोर का ? 'देह निज', सुर गृह ? 'कोष अदाग ॥९
तृष्णा त्रिविध सनेह विनु, सोई स्वर्ग अनूप ।
युगलानन्यशरन अपर, दुख दायक भव कूप ॥१०॥
द्वार असार विकारमय, नरकहूँ ते दुख कौन ?
नारी अविचारी मिलन, करन सरस रस गौन ॥११॥
संसृति हर को ? वेद भव, निज अनुभव नव रूप ।
मोक्ष हेतु को ? सत सभा, ख्याति विशेष अनूप ॥१२॥
सुख सोवत को रैन दिन ?, जो समाधि रस लीन ।
जागत को औ ? सत असत, किये विवेक प्रवीन ॥१३॥
शत्रु कवन ? निज देह मधि, इन्द्री असत समाज ।
मित्र सोई पुनि विजय करि, सब प्रकार सुख सा.. ॥१४
दारिद्री को ? लोभ जेहि, अधिक हृदय भरि पूर ।
श्रीशोभा सम्पन्न ? सो, जो सन्तोष हजूर ॥ १५ ॥
जीवत मृतक सु कौन प्रभु ? सब उद्यम ते हीन ।
सुधा सदृश अति स्वादुमय, कौन ? दुरासा छीन ॥१६
फांसी दुखरासी कवन ? ममता मद देहादि ।
सुरा सदृश मोहनी को ? वामा सब विधि वादि ॥१७
महाअन्ध को ? मदन ते, जो आतुर नित होय ।
मृत्यु प्रवल ? अपजस सुनिज, कहे भलो नहिं कोय ॥१८
गुरू कवन ? जो हित वचन, करे सदा उपदेश ।
सिष्य ? सोई गुरु भक्त जो, सेवा ? पद परवेश ॥१९॥
रोग अखर्व ससोग को, कहिये श्री गुरुदेव ।
जगत जाल औषद कवन ? वर विचार निज भेव ॥२०
भूवन ते भूषन कवन ? शील सदा सब साथ ।
तीरथ परम पवित्र को ? निजमन शुद्ध सनाथ ॥२१॥
तजन जोग जग माँझ का ? करुनाकर सुखकन्द ।
कनक कामिनी कठिन कटु, दायक दिल दुख द्वन्द ॥२२॥
सेवनीय संसार में, कहा पदारथ नीक ?
श्रुति सतगुरु बानी विमल, करि उर दृढ़तर ठीक ॥२३॥
श्री सीतावर मिलन मधि, हेतु निरूपिय आप ?
सहज तोष इन्द्री दमन, अमल विवेक अताप ॥२४॥
सन्त संग रस रंगमय, नाम रूप रस पान ।
ये पांचो प्रभु भेंट हित, हैं उपाय सुख खान ॥२५॥
संत सही को ? कौन चित, राम तत्व वर इष्ट ।
मोह रहित वैराग युत, सकल प्रकार वरिष्ट ॥२६॥
ताप कदम्ब अनन्त दुख, दायक कौन कृपाल ?
चित चिंतन चिंता सतत, परे विषम भ्रम जाल ॥२७॥

मूरख को ? जाके नहीं, सद अरु असद विचार।
खान पानमें मगन नित, तजिके भजन उदार ॥२८॥
कहिये पर कर्त्तव्यता ? श्रीपरेश पर प्रेम।
दोष कवन अतिशय प्रबल ?जीवन पद बिन नेम॥२९
विद्या कौन अनूप सुठि ? जेहि पढ़ि लखे स्वरूप।
अपर अविद्या सम सकल,पढ़न लिखन भ्रम रूप॥३०
लाभ विसद बरनिय प्रभु, कृपा सिन्धु सुख रास।
निज पर रूप प्रत्यक्षता, है इह लाभ हुलास ॥३१॥
हान कवन करुनानिधे, प्रान गये ते कष्ट ?
देह गेह आसक्तता, विगत ज्ञान सुभ सुष्ट ॥३२॥
जग विजयी सब भाँति ते,को ? जेहि मन वस कीन।
हरदम प्रीतम नाम गुन, भजहिं सप्रेम प्रवीन ॥३३॥
शूर शिरोमनि शान युत, कौन पुरुष वरदैन ?
बँध्यो न जो तिय नैन सर,मनमथ जीति अमैन॥३४॥
प्राज्ञ धीर सब पूज्य को ? जेहि न वाम बस कीन।
अविचल चित्त प्रमाद बिन, तेई संत अदीन ॥३५॥
विषहूँ ते विषतर कवन ? विषय पाँच की आंच।
विष मारत वारक जनहिं,विषय नचावत नाच ॥३६
धन्य ? सोई सब रीति से, जाके पर उपकार।
युगलानन्यशरन वदत, तेई सन्त उदार ॥३७॥
कौन पूज्यतर विश्व मधि ? गह्यो तत्व जिन सार।
त्यागि विकार विहार सब, भये मोहनिधि पार॥३८॥
सदा न करिवे योग का ? जगत नेह अरु पाप।
है कर्त्तव्य विशेष का ? पढ़न धरम गत ताप ॥३९॥
जगत मूल ? चिन्ता प्रबल, जेहि वस ज्ञान मलीन।
जगत सार का ? एक रस,'वस्तु विचार प्रवीन॥४०॥
परम विज्ञ विज्ञन विषे, को कहिये नतपाल ?
माया मलिन पिसाचिनी, जेहि नहिं ठग्यो कराल॥४१
कौन शृंखला जीव को ? नारी नींच कुसंग।
दिव्य कवन व्रत दोष हर,अतिशय दीन असंग॥४२॥
कठिन जानिवे योग का ? वामा चित्त चरित्र।
दुस्त्यजका ?'आसा असद',पशुको ?अपढ़ विचित्र४३
काके संग न बसिय प्रभु ? कहिये कृपा करि आप।
मूरख खल सठ पाप तिमि,चारि कठिन संताप॥४४॥
उचित मुमुक्षु जनन को, कौन हमेश, रहस्य ?
संत संग भव भंग हित, तजि के मोह अवश्य॥४५॥
ममता करिवे योग को ? युगल चरण सियराम।
युगलानन्यशरन इहै, दायक पूरन काम ॥४६॥
दुर्ल्लभ तन का कृपाकर ? 'मानव' दुख बड़ कौन।
भजे न जो रघुवीर पद, होइ असद दिसि मौन ॥४७॥
विपिन बसे का लाभ प्रभु, सत जन कहो कृपाल।
राग द्वेष विरहित छमा,दोष शान्ति मुद माल॥४८॥
विमल विरति ? संसर्ग से, सहज उदासी होत।
युगलानन्य उपाधि तजु, बसु एकान्त निसोत ॥४९॥
निर्गुन निर अवयव कवन, निराकार गुरुदेव ?
त्रिगुण रहित गुन दिव्य युत,अप्राकृत बिन नेव ॥५०
शुद्ध सच्चिदानन्द घन, अवयव तत्व विहीन।
लौकिक गत आकार वर, निराकार छवि मीन॥५१॥
ईस सर्व पर गुन कवन ? शरनपाल समरत्थ।
सर्व प्रियतम प्रान सम, जेहि तारे जल पत्थ ॥५२॥
खीझत हूं फल रीझ को, देत कौन नतपाल।
प्रगट कथा श्रीराम की, अगनित अघी निहाल॥५३॥
प्रभु प्रसन्न को हेतु वर, एक विशेष विशाल।
कौन पदारथ ? प्रेमयुत, नाम रटन तजि जाल॥५४॥
सकल ईश वन्दी विमल,धाम ललित अभिराम ?
विमला श्रीसाकेत शुभ, जहँ विहार सियराम॥५५॥
नाम अनन्त प्रमान पट्ट, मोक्ष सुखद शिरताज।
कौन नाम निज मुकुटमनि ? रामनाम छविछाज॥५६
बिना बिचारे अर्थ तर,लखि न परत बड़ छोट।
जैसे परखे बिन रतन, क्यों कहिये खर खोट ॥५७॥
केहि सेवक भय डरत सब ? पूजित अति को दास ?
हनुमत शिव रावण अनुज,कथा भुसुण्डि प्रकास॥५८
सुगम अगम अतिशय कवन ? श्रीगुरुदेव दयाल।
जानु शिष्य रघुबीर सिय,दुर्ल्लभ सुलभ रसाल॥५९

बानी असद असाधु रुज, ग्रसित मलिन दुखकंद ।
कौन कृपासागर कहो ? सियवर रहित सुछंद ॥६०॥
ज्ञानहु पाय अनेक विधि, मुक्ति लहत नहिं लात ।
हेतु कवन प्रभु ? राम सिय, भजन निरादर नात॥६१
चलत कवनपथसारमधि ? जेहिजन रुचि निजनाम ।
कुपथ गमन काको प्रबल ? जेहि साधन गत वाम॥६२
अति अनमोल अतोल का ? परा भक्ति रस एक ।
कर्म कवन अभिलाष बिन ? अनासक्ति प्रभु टेक॥६३
भाव रूप की दश गुरो ? पाँच देह संयोग ।
रहित षष्ट निज रूप प्रिय, तर आवेश सुभोग॥६४॥
प्रीति कवन करुनायतन ? सुधि न रहै दिशि आन ।
दार चकोरी चातकी, मीन नेह गत प्रान ॥६५॥
नाम रटै गति कौन की, होत बहुत दिन बीच ?
दश अपराध असाध युत, षट समेत सग मीच॥६६॥
हारे को ? जो जीत हित, फिरत फरेब समेत ।
जीत्यो को सब चर अचर ? हारि मान जो लेत॥६७॥
महा मोद मङ्गल असल, कौन ठौर कृतपाल ?
श्रीसद्गुरु सेवन सदा, तजि ममता मद माल॥६८॥
अचल करन बर बाग केहि, श्री सतगुरु सियराम ।
युगलानन्य विवेक सजि, पाइय पर आराम ॥६९॥
सुधा सिरोमनि साँच सुख, सौंपत को ? गुरुदेव ।
श्री सीतावल्लभ सुजस, सरस नाम मल भेव॥७०॥
पानिप परम परस्य केहि, भाँ त उदित उर होत ?
युगलानन्य उपासकन, संग सजे जस जोत ॥७१॥
नाना मत मधि सार कह, कहो कृतज्ञ कृपाल ?
जेहि अन्तर सीतारमन, नेह निरूपन भाल ॥७२॥
के साधन साजे सदा ? रहे निसा नव नैन ।
युगलानन्यशरन सहित, आरत नाम सुबैन ॥७३॥
जपन निरन्तर विरह युत, हाय उठावन रोज ।
या साधन के करत ही, होत उदय छवि ओज ॥७४॥
बार बार केहि कथा को, पूछौं श्री गुरुदेव ?
श्रीसीतावल्लभ सुजस, नाम रहस निज भेव॥७५॥

पांचो भाव विचित्रतर, तदपि कहो सिरताज ?
युगलानन्य सिंगाररस, सर्वोपर महराज ॥७६॥
अनुते अनु का कहिय प्रभु ? सियवर प्रभा अनूप ।
जात न जहँ योगीश मन, कहि न सकत त्रिनिरूप॥७७
वाह वाह इह विश्व की, केहि चित रुचत कृपाल ?
कियो न जिन सतसंग बुध, सहित विवेक विशाल॥७८
दावानल सत सहस सम, दहत कौन दिन रैन ?
वाम विषाद विकार वपु, अहंकार मन मैन ॥७९॥
आदर दान दिये बढ़त, चढ़त शीशको ? नीच ।
बिना बिचारे कौन थल, दुखद ? भूप सद बीच॥८०॥
स्वाद सीस का परम सुचि ? सहज तोष सब काल ।
अनइच्छित सब विषय सुख, भोग अशोग असाल॥८१
है। देह विभाग नहिं, कौन स्वरूप मझार ?
सियवल्लभ परिकर सहित, नित्य मध्य सुखसार॥८२
केहि दिल शिव नितहीं बसत, प्रेम समेत मशान ?
नाम इष्ट मधु मिष्ट के, श्रवन हेतु सुख खान॥८३॥
काके तोष भये परम, प्रभु, सन्तोष विचित्र ?
सन्त सनेही श्रवन ते, कथा पुरान पवित्र ॥८४॥
जड़ मोहन अनयास को ? गान तान तिय नैन ।
युगलानन्यशरन सतत, करिये दृढ़ मत चैन ॥८५॥
कौन देश बर बसन हित, सतत कृपाल विशेष ?
सरस सजाती मिलहिं बहु, विगत विचित्र अशेष॥८६
मानी अभिनन्दन कवन ? जेहि प्रीतम गुन मान ।
सेवक स्वामी नात नित, निर्वाह्यो सुख जान ॥८७॥
बिना देह को परम पद, पायो दीन दयाल ?
सौम्य संत संगति निपुन, बारी व्यसन कुशाल॥८८॥
कहिये केहि अभ्यास प्रभु, रुचि समेत आनन्द ?
करे एक रस मति परम, नसे तबै दुख द्वन्द ॥८९॥
साँझ प्रात दिन बीच में, कौन विशेष न योग ?
भोजन सैन उपाधि तिमि, काम क्रोध चहुँ भोग॥९०॥
प्रथम कठिनतर कटु लगत, देत मोद परिनाम ।
कहा कहिय ? रघुबर भजन, गुरु बानी सुखधाम॥९१॥

लघु गुरु मधि कारन कवन ? चाह अचाह विचाह ।
जनम मरन ते रहित को ?जेहि नाहिं उभय असार।।९२
मूक बधिर पंगू अचख, कौन कहो सुखकन्द ?
सियवर बिनु बानी श्रवन, बदन कर्म गति द्वन्द।।९३।।
परम तत्व सिद्धान्त मत, अति अद्वैत अनूप ।
कौन कहिय करुनायतन ? श्री रघुबीर स्वरूप ।।९४।।
कौन कर्म कल्यान कर, नाशक तिमिर तमाम ?
सियबल्लभ सेवा सरस, पूजनादि सुख धाम ।।९५।।
तोष होत केहि ते न चित ? बिषय समस्त असार ।
दुःख मूल अविनोदमय, प्रीति अनित्य विकार।।९६।।
मुख मण्डन का सुढ्वर ? वचन मधुर गुन संग ।
युगलानन्यशरन सुवत, चित चौगुन हरि रङ्ग।।९७।।
सुरति सजीली रूप किमि, जानि परे सुखरास ?
नाम रटे अभ्यास युत, निरखे हृदय हुलास ।।९८।।
तीन वासना असद का, श्री गुरु दया निकेत ?
लोक देह व ग्रन्थ रुचि, महा दुखद भव हेत ।।९९।।
परम पातकी-भूप को ? जेहि तन मधि निज भाव ।
जड़ चेतन समता गनै,सदा असद पद चाव।।१००।।
देय अमित फलजनक को ? अभय ज्ञान निजनाम ।
अपर दान लौकिक सकल,अंत विकल दुखदाम ।।१०१
रस स्वरूप का लोक है, कृपानिधान उदार ?
जेहि कन ते सब सुख लहै,सियवर अङ्ग विहार।।१०२
नित्य एक रस हूँ रहे, लीला निमित समेत ।
इह लक्षन सम्पन्न को ? सियवल्लभ संकेत ।।१०३।।
तीन दूषणा दुखमयी, कौन कहो नत बन्धु ?
सुवन वाम वित चाह चित,विगत विवेकअबन्धु।।१०४
सब अभिमत दातार को, कलिमल युग मधि देव ?
नाम संत सेवा अमल, माया रहित अदेव ।।१०५।।
धर्म अनूपम कौन प्रभु ? भजन भाव अनुकूल ।
ज्ञान इष्टमय विश्व सब, दरसे सहज अशूल ।।१०६
गुन समूह संसर्ग ते, रहित चितवन चाह ।
बिमल विराग अदाग को, कौन रूप मम नाह।।१०७।।
निश वासर बरवाद बिनु, बीतत जग जस त्यागि ।
युगलानन्यशरन सुभग,विसद विराग अदागि।।१०८
तप आमयहर ? काम मन, त्याग असद संकल्प ।
सूर सिरोमनि सही को ?जेहि स्वभाव जप कल्प।।१०९
सत्य सार ? आनन्द घन, सम दरसन सब काल ।
अपर सुकृत बानी विमल,उचित मुमुक्षुन हाल।।११०
सौच सुभग ? सब कर्म महँ, संगम आस उदास ।
अपर सौच सामान्यता, दायक देह हुलास ।।१११।।
त्याग कवन करुना निधे ? सकल बस्तु सन्यास ।
यज्ञ सार ? सेवा अतिथि, परमानन्द प्रकास।।११२।।
सर्वोपर बल अमल अति, प्राणायाम प्रचार ।
सहित वासनायाम के, हरन कलंक अपार ।।११३।।
लाभ परम का ? सहज सुचि, सीताराम सनेह ।
मलिन हान को ? कामकृत, उत्कंठा उर गेह ।।११४।।
लाज काज साधक कवन ?निन्दित कृत दिशि द्वेष ।
सुख सौगुन दिनदिन कवन ? रहित अपेच्छा रेख।।११५
मम सियवर विज्ञान करि, अवलोकन जल जाल ।
संयम करन कदम्ब को, अनायास मुद माल ।।११६।।
नेम प्रेममय परम का, कृपा कोश कमनीय ?
सतत सजाती भावना, रहित विजाती हीय ।।११७।।
मौन कवन मन वचन पर ? राम नाम रस पान ।
अपर मौन जड़ बालको, वदहि विज्ञ विज्ञान।।११८।।
विजन देश गत क्लेश प्रभु,कौन परम मुद देत ।
निर्विकार सियलाल को, रहस सदन संकेत ।।११९।।
काल काल कटुता हरन, कौन एक रस तात ?
कल ना मन मति हीनजहँ,सुमिरन सरस सोहात।।१२०
आसन बिशद विनोद प्रद, रुज नाशक आराम ?
जेहिविधि सहज अखंडअति,चिंतन सिय सह श्याम१२१
अधिष्ठान आनन्द को ? सियवल्लभ गुन गाथ ।
युगलानन्यशरन सतत, भजु राघव निज नाथ।।१२२

(क्रमशः)